- जड़ व तना सड़न रोग की रोकथाम के लिए बुवाई से पहले बीजों को कार्बेन्डाजिम 12% + मेन्कोजेब 63% डब्लू.पी. को 2.5 ग्रा./किग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। जड़ सड़न की रोकथाम के लिए फसल चक्र और स्वच्छ खेती महत्वपूर्ण हैं। प्रतिरोधी किस्में उगाएँ।

- चूर्णी फफूंदी रोग के नियंत्रण के लिए घुलनशील गंधक (0.2 प्रतिशत) का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल में 2 बार करें।

- एस्कोकाइटा झुलसा के नियंत्रण के लिए बेनोमाइल (0.2%), क्लोरोथालोनिल (0.2–0.3%) और थीअबेण्डाजोल (0.1–0.2%) जैसे कवकनाशी से बीज उपचार की सलाह दी जाती है। क्लोरोथैलोनिल (2 लीटर/हेक्टेयर) का उपयोग करके पत्तियों पर छिड़काव (यदि आर्थिक रूप से संभव हो) शुरुआती फूल आने से लेकर शुरुआती फली बनने तक, एकल छिड़काव के रूप में, सर्वोत्तम सुरक्षा प्रदान करता है।

कीट नियंत्रण

कीट	क्षति	नियंत्रण
माहू	मटर के पौधे का रस चूसते हैं जिससे पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं। गंभीर संक्रमण होने पर पौधे की वृद्धि रुक जाती है।	एमिडाक्लोप्रिड 220 मि.ली./हे. 500 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करे।
फली छेदक *मारुका टेस्टुलैटिस, हेलिकोवर्पा आर्मिगेरा, एटिएला स्पे.*	इन कीटों के लार्वा पत्तियों और फूलों को खाते हैं। फलियाँ बनने के बाद, लार्वा फलियों में छेद कर देते हैं और विकसित हो रहे दानों को खाना शुरू कर देते हैं।	इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 200–250 ग्राम/हे. 500 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

कटाई एवं मड़ाई

- फलियों के पक जाने पर फसल की कटाई हॅसिया से करना चाहिए। तत्पश्चात फसल को सूखने के लिए बण्डल बनाकर फसल को खलिहान में ले आते हैं। फिर 2–3 दिन सुखाने के पश्चात थ्रेशर द्वारा गहाई किया जाना चाहिए।

- साफ बीजों को 3–4 दिनों तक धूप में सूखने के लिए रखा जाना चाहिए, इससे सुरक्षित भंडारण के लिए बीज की नमी के स्तर को 9–10% तक कम करने में मदद मिलेगी।

उत्पादन

- 20–25 क्विंटल/हे.

भण्डारण

- भण्डारण हेतु नमी का प्रतिशत 8–10 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। भण्डारण पूर्व बीजो को धूप में अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए। भण्डारण में कीटों से सुरक्षा हेतु एल्युमिनियम फास्फाइड की 3 गोली प्रति टन प्रयोग करें।

- ब्रूचिड्स और अन्य भंडारण कीटों को नियंत्रित करने के लिए, भंडारण सामग्री और गोदाम को मानसून की शुरुआत से पहले और फिर मानसून के बाद एएलपी/1–2 टैबलेट प्रति टन के साथ धूम्रित करने का सुझाव दिया जाता है।

प्रकाशक
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान
कानपुर-208 024

(प्रकाशन सं. : 04/2026 | मुद्रित : मार्च, 2026)

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान
क्षेत्रीय केन्द्र, फंदा, भोपाल

भाकृअनुप
ICAR

मध्य भारत के किसानों के लिए मटर की उत्पादन प्रौद्योगिकी

सुरेंद्र घृतलहरे, निधि कुमारी, दिबेन्दू दत्ता
गीतांजलि सहाय एवं अमित भटोरे

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान
कानपुर-208 024

भूमि की तैयारी

- एक समान सिंचाई और उचित जल निकासी सुनिश्चित करने के लिए मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई और उसके बाद दो से तीन सामान्य जुताई और उचित समतलीकरण करना चाहिए।
- उचित जल निकास वाले खेत जिनका पीएच मान 6.5 से 8.5 के मध्य हो तथा बलुई दोमट से चिकनी मिट्टी हो, दलहनी फसलों के लिए उपयुक्त होते हैं। समान अंकुरण के लिए 2–4 इंच की गहराई पर *डिब्लिंग* विधि से बुवाई अच्छी होती है।

बीजोपचार (मृदाजनित रोगों से बचाव हेतु अनिवार्य है)

- कार्बेन्डाजिम 12% + मेन्कोजेब 63% डब्लू.पी. अथवा थिराम 75% डब्लू.पी. 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज अथवा दलहनडर्मा पाउडर 10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज से बुवाई पूर्व उपचारित करें।
- राइजोबियम तथा फॉस्फोरस घुलनशील जीवाणु (पी.एस.बी.) 250 मि.ली. प्रति 50–60 कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।
- बीज उपचार और टीकाकरण एक साथ नहीं किए जा सकते।
- बीज टीकाकरण से 2–3 दिन पहले बीज उपचार करना चाहिए।
- यदि बीज का उपचार कवकनाशी से किया गया है, तो जीवाणु संवर्धन की दोहरी खुराक का प्रयोग करें।
- बीज उपचार और टीकाकरण का क्रम इस प्रकार होना चाहिएः कवकनाशी उपचार, उसके बाद राइजोबियम टीकाकरण, और उसके बाद फास्फोरस घुलनशील टीकाकरण।

विभिन्न परिपक्वता समूह की महत्वपूर्ण उन्नत किस्में

किस्म	परिपक्वता अवधि (दिन)	औसत उत्पादन (कु./हे.)
आईपीएफडी 12–2	110–115	22–25
आईपीएफडी 11–5	110–115	20–22
आईपीएफडी 2014–2	110–115	20–22
आईपीएफडी 10–12	115–120	20–22

बीज दर तथा बुआई का समय

- जल्दी पकने वाली किस्मों के लिए 80–100 कि.ग्रा./हे.।
- अक्टूबर 15 से नवम्बर 15 के मध्य बुआई करें।
- पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेंटीमीटर होनी चाहिए।

उर्वरक प्रबंधन

- बेहतर उपज के लिए संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें।
- नाइट्रोजनःफास्फोरसःपोटास 20:50:20, सल्फर (गंधक) 20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बुआई से पूर्व डालें, अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 5 टन/हे. के दर से खेत में जुताई करते समय डालें।
- फसल में शाखाओ के बनते समय 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।
- 15–20 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हे. तथा 1–1.5 कि.ग्रा. अमोनियम मोलिब्डेट का प्रयोग करें ।

खरपतवार प्रबंधन

- मटर के खेतों को शुरुआती दो महीनों तक खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए और बाद में फसल स्वयं खरपतवारों पर नियंत्रण कर लेती है।
- बुवाई से पहले 500 लीटर पानी में पेंडीमिथिलिन 30% ईसी 3.5 लीटर/हे. की दर से छिड़काव करें।
- बुवाई के 10–15 दिन बाद हाथ द्वारा कतारों के बीच की खरपतवारो का नियंत्रण किया जा सकता है।
- बुवाई के 25 और 40 दिन बाद दो बार हाथ से निराई करें।

जल प्रबंधन

- मटर में शाखाएं बनते समय एवं फली बनते समय 1–2 हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है।
- *स्प्रिंकलर* विधि से सिंचाई करना उचित है।
- फसल की पुष्पन अवस्था के दौरान सिंचाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- सिंचाई करते समय जलभराव की स्थिति उत्पन्न न हो, इसके लिए विशेष सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि मटर के खेत में एक दिन भी जलभराव होने से उपज में काफी कमी आ सकती है।

फसल सुरक्षा